प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद समाज के संबंधों का अध्ययन सामाजिक कर्ताओं के मध्य होने वाले प्रतीकात्मक सम्प्रेक्षण/संचार के संदर्भ में करता है। सी एच कूले, हरबर्ट ब्लूमर, मीड प्रमुख प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी है।

प्रतीक – ऐसी क्रियाएं, वस्तुएं, ध्वनियां, चित्र, वस्त्र जिनका प्रयोग किसी घटना को प्रकट करने के लिए किया जाता है। प्रतीक एक साधन है जिसके द्वारा एक शिशू अपना जीवन प्रारम्भ करता है। पीयरे बारदियू के अनुसार भाषा सर्वाधिक शक्तिशाली प्रतीक है।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद शब्द की उत्पत्ति हर्बर्ट ब्लूमर से जुड़ी है। 1937 में सिम्बोलिक इन्टरएकशनिज्म : पर्सपेक्टिव एण्ड मेथड़ (सिम्बोलिक इन्टरएक्शनिज्म)इस शब्द का प्रयोग किया। कुछ विद्वानों का मानना है कि इसका सर्वप्रथम प्रयोग मीड ने 1934 में किया।

प्रमुख आधार या विशेषताएं – इसके चार प्रमुख आधार है –

1. मानव संकेत का प्रयोग करने वाला प्राणि है। संस्कृति, भाषा। केवल मानव प्राणि ही ऐसा कर सकता है। अंतर्क्रियावादी उन तरीकों का अध्ययन करते है जिनके द्वारा प्रतीकों को अर्थ प्रदान करते है। इसके लिए सहभागी अवलोकन विधि का प्रयोग करते है।
2. ये सामाजिक विश्व को गतिशील ताना बाना मानते है। जीवन में संघर्ष एवं अनिश्चिता बनी रहती है।

3. इसकी विश्लेषण की मूल इकाई "स्व" है जो अंतर्क्रियात्मक प्रकृति का है। यह भूमिका ग्रहण की प्रकिया के लिए दूसरों से संबंधित है। इसे कूले ने आत्मदर्पण, मीड ने स्व सिद्धांत से स्पष्ट किया।
4. ये प्रतीकों के पीछे छूपी हुई प्रकियाओं और अंतःक्रियाओं की खोज करते है।

इसमें विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से मिलकर जीवन अनुभवों को मालूम कर सभी समूहों में समान प्रकियाओं का अध्ययन करते है। शेल्डन स्ट्राइकर – सोशल इन्टरएक्शन – ए सोशल स्ट्रक्चर वर्सन, 1980

जॉर्ज हरबर्ट मीड

- सामाजिक अंतःक्रियावादी मीड का जन्म 27 फरवरी 1863 को अमेरिका में हुआ। 26.4.1931 को जीवन यात्रा समाप्त होती है।
- प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद को साकार रूप ब्लूमर ने दिया लेकिन इसकी पृष्ठभूमि व अनेक अवधारणाएं मीड द्वारा दी गई है।

- मीड ने सिद्धांत माइंड, सेल्फ एण्ड सोसायटी, 1934(मृत्यू के बाद प्रकाशित, मॉरिस द्वारा सम्पादित) में सामाजिक मनोविज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया। शिकागो सम्प्रदाय
- उत्तेजनाओं को दो प्रकार प्राथमिक उत्तेजना एवं द्वितीयक उत्तेजना है।
- मीड – सामाजिक अंतःक्रिया वह पारस्परिक प्रभाव है, जिसमें मनुष्य अंतःउत्तेजना तथा प्रक्रिया द्वारा एक दूसरे पर प्रभाव डालते है। इस प्रकार मानवीय अंतःक्रिया में सामाजिक उत्तेजना का अत्यधिक महत्व है।

मीड अपने सिद्धांत में मुख्य रूप से चार अवधारणाएं रखते है –

1	स्व	**Self**
2	स्व – अंतःक्रिया	**Self Interaction**
3	स्व का विकास	**Development of the self**
4	प्रतीकात्मक अभिप्राय	**Symbolic Meaning**

इस प्रकार "स्व" की अवधारणा मीड प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद की आधारभूत अवधारणा है। व्यक्ति व संबंधों का अध्ययन सामाजिक अंतःक्रियावाद से किया

1.स्व

- मनुष्य के अंदर स्व होता है जो जन्म के समय विशुद्ध, आवेशपूर्ण है।
- असमाजीकृत शिशु। फ्रायड का इड/इच्छाओं का पुंज।
- उसे पता चलता है कि रोने से दूध/गोद अर्थात् सुविधाएं मिलेगी। तब स्व विकसित होता है तो ये स्व के विकास की प्रारम्भिक अवस्था है।
- जब बाहर की बातें/चीजें "स्व" के पास पहुंचती है तो स्व का इनसे सम्पर्क होता है। तब स्व इनका मूल्यांकन करता है। ये मूल्यांकन ही स्व स्वयं स्व से अंतःक्रिया करता हैं। मूल्यांकन के आधार समाज के मूल्यों को स्वीकार या अस्वीकार(नवीनता) करता है।

2. स्व – अंतःक्रिया **Self Interaction**

इस प्रकार इस "सावयवी स्व" से पूर्ण "विकसित स्व" बनने की प्रक्रिया में स्व को दो अवस्थाओं/भागों में विभाजित किया है –

1. मैं – यह जैवकीय (सावयवी स्व) रूप है, मनमाना है, समाज से कोई सरोकार नहीं है। दूसरों के प्रति व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले व्यवहार है

2. मुझे – यह स्व की दूसरी अवस्था (सामाजिक स्व) है। दूसरों से सीखकर समाज के मूल्य, मानक आदि को अपना मान लेता है। व्यक्ति द्वारा किये गए व्यवहार पर दूसरों की प्रतिकिया या प्रत्युत्तर है। वह समाज की भूमिकाओं को अपना लेता है व बाहरी दूनिया को अपनी दूनिया समझने लगता है। ये सब प्रतीकों द्वारा होता है।

3. स्व/आत्म का विकास –

स्व के विकास तीन अवस्थाओं से होकर गुजरता है – तादात्मीकरण

1. प्रथम अवस्था **(Imitation/Prepartory Stage)** – इसे नकल की अवस्था भी कहा जाता है। दो वर्ष से कम। वस्तु एवं व्यक्ति में अंतर नहीं।
2. द्वितीय अवस्था/क्रीड़ा अवस्था**(Play)** – इसे नाटक की अवस्था भी कहा जाता है। दो से सात वर्ष। दो वर्ष के बाद व्यक्ति के स्व का विकास तीव्र होता है। इसके बाद बच्चा दूसरों की भूमिकाओं की नकल करने लगता है। डॉक्टर व अध्यापक बनने का नाटक । भूमिका ग्रहण।

3. तृतीय अवस्था **(Game Stage)** – इसे भी खेल की अवस्थाकहते है। इसमें अन्य के साथ खेलता है। इसे मीड सामान्यीकृत अन्य कहते है। इमसें बच्चा भूमिका निर्वाह प्रारम्भ कर देता है। भूमिकाओं, आदर्शों का आंतरिकरण प्रारम्भ कर देता है।

- सामान्यकृत अन्य – किसी व्यक्ति की स्वयं के बारे में वह धारणा जो दूसरे लोग उसके संबंध में रखते है। मुझे इसका प्रतिनिधित्व करता है।
- विशिष्टीकृत/महत्वपूर्ण अन्य/सिग्नीफाइड अदर – जिनका व्यक्ति पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है तथा उनकी स्वीकृति हम चाहते है। वहीं मैं विशेषकृत अन्य का प्रतिनिधि है।

4. प्रतीकात्मक अभिप्राय

प्रतीक से तात्पर्य संकेत/इशारे से है। संकेत वे तत्व है जिनका आंतरीकरण कर लिया है और जो एक ही अर्थ को प्रकट करते है अर्थात् समाज विशेष के सभी लोगों के लिए समान अर्थ होता है। इन प्रतीकों का निर्माण व्यक्तियों द्वारा किया जाता तथा अंतःक्रिया द्वारा सिखा जाता है। इन की जा सकती है। समाज एवं व्यक्ति एक दूसरे के लिए अपरिहार्य है, इसके अभाव में मनुष्य, मनुष्य बन सकता है।

स्व का विकास ही प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद सिद्धांत का मूल है।

प्रमुख पुस्तकें

1. **Towards of theory of the Philosophical deciplin, 1900**
2. **The Social Self 1913**
3. **The Nuture of the Past 1921**
4. **The Philosophy of the act, 1938**
5. **The Philosophy of the Present, 1939**